vinetur

Champagne की 2026 कटाई में किलो-दर मज़दूर दिन में सिर्फ 200 से 300 किलो जुटा रहे हैं

यह सामान्य मात्रा का लगभग आधा है, जिससे पहले से ही जल्दी शुरू हुई कटाई में किलो-दर दलों की कमाई घट रही है।

सोमवार, 24 अगस्त 2026



Champagne की 2026 अंगूर कटाई में, क्षेत्रीय संवाददाता के अनुमानों के अनुसार, किलो के हिसाब से भुगतान पाने वाले कुछ दाखबारी मज़दूर रोज़ाना आमतौर पर जितना अंगूर इकट्ठा करते हैं, उससे कहीं कम ला रहे हैं; यह बदलाव कुछ दलों की कमाई घटा रहा है और पहले से ही जल्दी शुरू हुई कटाई पर दबाव बढ़ा रहा है।

टुकड़ा-दर पर काम करने वाले मज़दूरों का बताया गया दैनिक उत्पादन घटकर लगभग 200 से 300 किलो प्रतिदिन रह गया है, जबकि सामान्य दायरा 400 से 580 किलो का होता है। निचले स्तर पर यह 200 किलो की गिरावट है, यानी करीब 50%। ऊपरी स्तर पर यह 280 किलो कम है, यानी करीब 48%।

ये अनुमान आधिकारिक आँकड़े नहीं हैं और Champagne के पूरे क्षेत्र को नहीं मापते। इन्हें इस तरह भी नहीं पढ़ा जाना

चाहिए कि पूरे क्षेत्र में प्रति हेक्टेयर दाखबारी उपज समान रूप से घट गई है। इसके बजाय, ये उन मज़दूरों की शारीरिक दैनिक उत्पादकता का वर्णन करते हैं, जिन्हें कटाई के दौरान इस आधार पर भुगतान किया जाता है कि वे कितने किलो अंगूर तोड़ते हैं।

फिर भी, ये आँकड़े उत्पादकों और श्रम ठेकेदारों के लिए सीधे समस्या की ओर इशारा करते हैं। जब वजन के हिसाब से भुगतान पाने वाले मज़दूर अपनी सामान्य मात्रा का सिर्फ आधा, या लगभग आधा, अंगूर जुटाते हैं, तो दरों में समायोजन न होने पर उनकी कमाई तेज़ी से गिर सकती है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसी वजह से कुछ मज़दूरों ने किलो-दर वाले काम ठुकराने शुरू कर दिए हैं, जिससे उन नियोक्ताओं पर नया दबाव बन रहा है जिन्हें अंगूर जल्दी इकट्ठा करने हैं।

मुद्दा इसलिए अहम है क्योंकि Champagne की कटाई बेहद कड़े समय-निर्धारण पर चलती है। गुणवत्ता बचाने के लिए अंगूर एक छोटे से समय-खंड में तोड़े जाने चाहिए, और श्रम की कमी इस काम को धीमा कर सकती है। यदि कम मज़दूर टुकड़ा-दर वाले काम स्वीकार करने को तैयार हों, तो उत्पादकों को प्रति घंटे भुगतान पर अधिक निर्भर होना पड़ सकता है, विकल्प दल तलाशने पड़ सकते हैं, या उन खंडों में देरी का सामना करना पड़ सकता है जहाँ अंगूर एक ही समय पर तैयार हों।

कम दैनिक तुड़ाई संख्या का असर मजदूरी से परे भी है। टुकड़ा-दर का काम अक्सर इसलिए इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि यह, जब अंगूर भरपूर हों और गुच्छे आसानी से उठाए जा सकें, कटाई कार्यों को तेज़ कर सकता है। जब मज़दूरों को कम किलो के लिए कतारों में अधिक समय लगाना पड़ता है, तो श्रम-दक्षता घटती है। इससे अंगूर के हर किलो की कटाई लागत बढ़ सकती है और उन हाउसों तथा उत्पादकों के लिए योजना बनाना जटिल हो सकता है जो तेज़ संग्रह पर निर्भर करते हैं।

इस साल की जल्दी शुरू हुई कटाई इस दबाव को और बढ़ा रही है। जल्दी शुरुआत दाखबारी मालिकों, प्रेसिंग हाउसों, परिवहन और मौसमी श्रमिकों की भर्ती के शेडयूल को संकुचित कर देती है। ऐसी स्थिति में कम दैनिक उत्पादकता जल्दी ही एक लॉजिस्टिक समस्या बन सकती है, खासकर अगर एक साथ कई स्थलों पर दलों की ज़रूरत हो।

उपलब्ध जानकारी यह दावा नहीं करती कि Champagne के सभी दाखबागानों में एक जैसे नतीजे दिख रहे हैं। हालात गाँव-दर-गाँव और यहाँ तक कि एक प्लॉट से दूसरे प्लॉट तक काफी अलग हो सकते हैं। कुछ प्लॉट अभी भी दूसरों की तुलना में तेज़ तोड़ाई की अनुमति दे सकते हैं, यह अंगूर के भार, बेलों की स्थिति, कतारों की बनावट और पकने के समय पर निर्भर करता है। यहाँ उद्धृत अनुमान पूरे अपीलेशन की औपचारिक गणना के बजाय खेत-स्तर के अवलोकनों को दर्शाते हैं।

फिर भी, रिपोर्ट किए गए दायरे यह संकेत देते हैं कि किलो-आधारित अनुबंध पर काम करने वाले मज़दूरों के लिए एक दिन के काम से मिलने वाला नतीजा काफ़ी बदल गया है। सामान्य परिस्थितियों में, 400 से 580 किलो तक पहुँचने वाला एक मज़दूर ऐसी नौकरी को सार्थक बनाने के लिए पर्याप्त कमाई कर सकता है। 200 से 300 किलो पर, वही काम शायद अब स्वीकार्य दिन-भर की कमाई न दे, खासकर उन मौसमी श्रमिकों के लिए जो कटाई के लिए यात्रा करते हैं और जिन्हें आवास, भोजन और परिवहन लागत उठानी पड़ती है।

यह श्रम-संगठन और फसल की परिस्थितियों के बीच एक व्यावहारिक टकराव पैदा करता है। उत्पादक तब किलो-दर प्रणाली को प्राथमिकता दे सकते हैं जब वे तेज़ काम को पुरस्कृत करना और अंगूर जल्दी आगे बढ़ाना चाहते हों। मज़दूर ऐसे काम तब स्वीकार कर सकते हैं जब तोड़ने के लिए उपलब्ध मात्रा इतनी हो कि अच्छी दैनिक कमाई बन सके। लेकिन यदि प्रत्येक श्रमिक के लिए उपलब्ध अंगूर की मात्रा घट जाए, तो यह व्यवस्था कम आकर्षक हो जाती है, और प्रणाली में निहित प्रोत्साहन कमजोर पड़ जाता है।

रिपोर्ट कटाई में एक व्यापक आर्थिक संबंध पर भी रोशनी डालती है : कतारों में कम अंगूर उपलब्ध होने का सीधा असर श्रमिकों के उत्पादन, टुकड़ा-दर अनुबंधों के तहत कमाई और कटाई जल्दी पूरी करने की क्षमता पर पड़ सकता है। इसका

यह मतलब ज़रूरी नहीं कि दाखबारी का कुल उत्पादन भी उसी अनुपात में घट गया है, लेकिन यह ज़रूर दर्शाता है कि फसल इकट्ठा करने के लिए आवश्यक मानवीय श्रम कम-से-कम कुछ इलाकों में दिन में कम किलो दे रहा है।

Champagne के लिए, जहाँ कटाई का समय और उसकी हैंडलिंग उत्पादन के केंद्र में हैं, ऐसा बदलाव दाखबारी से प्रेस तक पूरी श्रृंखला में असर डाल सकता है। अगर दल धीमे चलें, तो परिवहन कार्यक्रम संभालना कठिन हो सकता है। अगर मज़दूर किलो-आधारित नौकरियाँ ठुकराएँ, तो नियोक्ताओं को शर्तों पर फिर से बातचीत करनी पड़ सकती है या टीमों को दोबारा तैनात करना पड़ सकता है। पहले से ही जल्दी शुरू हुई इस कटाई में, ऐसे समायोजनों से गलती की गुंजाइश कम रह जाती है।

किसी भी क्षेत्रीय निकाय ने इन अनुमानों को पूरे Champagne के लिए औपचारिक बेंचमार्क के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है, और ये संख्याएँ अभी भी सत्यापित आँकड़ों के बजाय खेत-स्तर के अवलोकन हैं। लेकिन उन्होंने ध्यान खींचा है क्योंकि वे कटाई के आयोजन के केंद्र तक जाते हैं: एक श्रमिक रोज़ कितना अंगूर शारीरिक रूप से ला सकता है, उस श्रम का भुगतान कैसे होता है, और जब अंगूर तैयार हों तो क्षेत्र कितनी जल्दी तोड़ाई पूरी कर सकता है।